आम की लकड़ी का

स्वास्तिक और श्रीयंत्र

आम की लकड़ी का स्वास्तिक– आम के पत्तों को भी मांगलिक प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है। मांगलिक कार्यों में आम की पत्तियां पतले धागों में बांधकर घर के प्रवेश द्वार पर बांधने की लोकप्रियता हमेशा से चली आ रही है। यही नहीं अपितु दीपावली के अवसर पर तो शहरों में भी लोग आम की पत्तियां अपने-अपने आवासों के प्रवेश द्वारों पर लटकाते एवं बांधते हैं। मंडपाच्छादन में भी आम की पत्तियों का प्रयोग किया जाता है तथा विविध अवसरों पर तोरण, बांस के खंभे, केले के खंभे आदि में भी आम की पत्तियां लगाने की परंपरा है। इस प्रकार आम का वृक्ष इतना पावन तथा उपयोगी है कि इसकी पत्तियां, लकड़ी, फल, आम्रमंजरी आदि से लोग लाभान्वित होते हैं।

अष्टमांगलिक चिह्नों की महत्ता अपनी जगह है। स्वास्तिक का महत्व सभी मांगलिक चिह्नों में प्रमुख स्थान रखता है। स्वास्तिक की चारों भुजाओं को चार वेद माना जाता है। यह एक पवित्र मांगलिक चिह्न ही नहीं माना गया वरन् इसे देवी और वेदों के प्रतीक रूप में पूर्ण मान्यता मिली। इसकी उपासना-पूजा पूर्ण विद्या वृद्धि प्रदान करने वाली व समस्त मनोरथ पूर्ण करने वाली होती है।

कुछ विद्वानों ने स्वास्तिक की चार भुजाओं को चारों दिशाओं का प्रतीक मानकर सूर्य का चिह्न या प्रतीक माना है। 'चार दिशाओं में व्याप्त विश्वमंडल के चतुर्भुजी रूप का यह प्रतीक सूर्य से संबंधित है। यह मंडल प्राची (पूर्व) दक्षिण, प्रतीची (पश्चिमी) और उदीची (उत्तर) दिशाओं से बना है और सूर्य उसका मध्य भाग है। यह मानव और विश्व का सर्वोत्तम मांगलिक चिह्न है।' इसीलिए इसी भावना से परिपूरित होकर व्यापारिक बहियों, लेजर बुक्स तथा अन्य लिखा-पढ़ी हिसाब खातों में सर्वप्रथम लाल डोरी से या लाल स्याही से मांगलिक चिह्न स्वास्तिक बनाते हैं। प्रत्येक नया कार्य करने से पूर्व स्वास्तिक की पूजा होती है।

आम की लकड़ी और स्वस्तिक दोनों का संगम कर अर्थात् आम की लकड़ी का स्वास्तिक बनाकर उपयोग किया तो परिणाम बहुत ही सुखद थे। आप भी इस आम की लकड़ी के बने स्वास्तिक को अपने घर के दरवाजे पर, अपनी पूजा की आलमारी पर, शुभ स्थानों पर अथवा जिस कोण में वास्तु दोष है वहाँ पर लगा सकते हैं और परिणाम स्वयं महसूस कर सकते हैं। आप चाहे तो इसे लाल रंग से रंग भी सकते हैं लेकिन उपरी परत पर ही रंग लगायें।

आम्रकाष्ठ स्वास्तिक न्यौछावर राशि- 550/-

आम्रकाष्ठ सुमेरूपृष्ठ श्रीयंत्र– जिस तरह भारतीय संस्कृति में आम्रकाष्ठ की जितनी महिमा है उसी तरह श्रीयंत्र की महिमा भी जगत् में सर्व प्रसिद्ध है। आज श्रीयंत्र से कौन वाकिफ नहीं है। सभी गृहस्थों की यह लालसा रहती है कि उनके घर में श्रीयंत्र विद्यमान हो और हो भी क्यों न यह लक्ष्मी का प्रतीक जो है। लक्ष्मी के बिना जीवन में किसी भी कामना की पूर्ति नहीं हो पाती, चाहे भोग या योग-लक्ष्मी की कृपा तो चाहिए ही! लेकिन लक्ष्मी को प्राप्त कैसे किया जाये?

लक्ष्मी स्वयं कहती है कि श्रीयंत्र तो मेरा आधार है, इसमें मेरी आत्मा वास करती है। श्रीयंत्र सभी यंत्रों में श्रेष्ठ कहा गया है और वास्तविकता में इसके प्रभाव से दरिद्रता पास भी नहीं फटकती। अद्भुत चमत्कारी है श्रीयंत्र।

श्रीयंत्र सब यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है इसलिए इसे यंत्रराज भी कहा गया है। श्रीयंत्र की रचना भी अनोखी है। पाँच त्रिकोण के नीचे के भाग के ऊपर चार त्रिकोण जिनका ऊपरी भाग नीचे की तरफ है, इस संयोजन से 43 त्रिकोण बनते हैं। इन 43 त्रिकोण को घेर कर दो कमल दल हैं पहले कमल अष्ट दल का है और दूसरा बाहरी कमल षोडश दल (16) का है। इन दो कमल दल के बाहर तीन वृत हैं और उसके बाहर है तीन चौरस जिसे भूपूर कहते हैं। इस प्रकार यह यंत्र 2816 शक्तियों अथवा देवियों का सूचक है और इस श्रीयंत्र की पूजा से इन सारी शक्तियों की समग्र पूजा हो जाती है।

अगर आप भी आम्रकाष्ठ पर बने सुमेरूपृष्ठ श्रीयंत्र को अपने घर में स्थापित करना चाहते हैं, लक्ष्मी को अपने घर में निमंत्रण देना चाहते हैं तो आम्रकाष्ठ सुमेरूपृष्ठ श्रीयंत्र को स्थापित करें । इसकी स्थापना से आठों सिद्धियों और नव निधियों के द्वार स्वतः खुल जाते हैं, भोग-विलास, भौतिक ऐश्वर्य तथा सुख-समृद्धि सभी कुछ प्राप्त हो जाता है। तो आईये आज ही अपने घर-ऑफिस में आम्रकाष्ठ से बने ऐश्वर्यदायी सुमेरूपृष्ठ श्रीयंत्र को स्थापित करें। जब भी पूजन करें मन ही मन ऊँ श्रीं श्रीयै नमः।। मंत्र का जाप करते रहें।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि पाप कर्मों से प्राप्त लक्ष्मी मृत्युदायिनी होती है, जबकि धर्मपूर्वक प्राप्त लक्ष्मी में स्थायित्व होता है और धर्मपूर्वक स्थायी संपत्ति प्राप्ति के लिए 'श्रीयंत्र' से बढ़कर कोई सात्विक साधन हो ही नहीं सकता। अतः इस दीपावली पर स्थापित कीजिए इन दिव्य यंत्रों को और अनुभव कीजिए लक्ष्मी कृपा की अनुभूति को।

सुमेरूपृष्ठ श्रीयंत्र न्यौछावर राशि– 2100/–

कल्याणी रक्षा कवच

प्राचीन काल में मारण, विद्वेषण, षटकर्म प्रयोग आदि तांत्रिककर्म एवं मंत्र गुप्त रखे जाते थे, गुरु योग्य शिष्यों को ही इनका ज्ञान देते थे, लेकिन आज नौसिखिये व्यक्ति इन का दुरुपयोग करने लगे हैं, ये कवच जहाँ एक और आप पर किये गये तांत्रिक प्रयोगों से रक्षा करेगा वही भविष्य में होने वाले किसी भी प्रकार की तंत्र बाधा से आपकी रक्षा करेगा! अपनी और अपनों की सुरक्षा आपके हाथ............

न्यौछावर राशि 4000/– रु.